शिव अवतरण

ओम शान्ति मीडिया | महाशिवरात्रि विशेषांक | माउण्ट आबू

शिव अवतरण फिर सृष्टि चक्र में...!

समय की गति इतनी तीव्र है कि उसे पहचानने के लिए हमें समयातीत होना पड़ता है। सभी कहते हैं कि समय आने पर हम खुद समझ जायेंगे अर्थात् संभल जायेंगे। लेकिन उस समय... तो समय आपसे आगे होगा, ना कि आप। ऐसे समय की पहचान देने स्वयं परमात्मा का आना हमारे लिए बहुत सुखद और सुकून भरा है। परमात्मा कहते हैं, आप दूसरों के अनुभवों से सीखो कि समय चक्र कैसा चल रहा है! क्या ऐसे समय में सुख शांति, पवित्रता अनुभव होगी! लेकिन आज अज्ञान अंधकार के कारण हर घर में कलह-क्लेष की प्रधानता हो गई और मनुष्य असंयमित जीवन व्यतीत करने लगा। ऐसे समय में परमात्मा शिव सुख, शांति, सम्पत्ति से भरपूर जीवन देने के लिए अवतरित हो चुके हैं। काल चक्र के इस समय पर सृष्टि को अज्ञान रूपी अंधकार से निकालने हेतु एक सुंदर घटना घटित होती है, जिसे हम शिवरात्रि या शिवजयन्ति के रूप में मनाते हैं।

जैसे घड़ी की सुई शून्य से आरंभ होकर पुन: बारह के आँकड़े को छूती है, इसके बीच जैसे दिन आरंभ होता है, तो आरंभ के समय को हम प्रभात, सुबह या मॉर्निंग कहते हैं। इसके बाद दोपहर का समय, आफ्टरनून का समय होता है, फिर संध्या का समय। इन सभी को हम चार प्रहर में बांटते हैं, जिससे एक दिन का चक्र पूरा होता है।

दिन तो एक ही है, लेकिन आरंभ को हमने सुबह कहा, उसके बाद के समय को दोपहर, उसके बाद संध्या कहा। ठीक वैसे ही सृष्टि के कालचक्र में भी चार प्रहर की पुनरावृत्ति होती है। आरंभ का समय अर्थात् सुनहरी सुबह, जहाँ सुख, शांति सम्पत्ति, समृद्धि से भरपूर सम्पन्नता थी जिसको हम स्वर्णिम युग या सतयुग भी कहते हैं। वहाँ मानव और प्रकृति में सतोप्रधानता का वर्चस्व था।

इस काल से थोड़ा आगे बढ़े तो जो समय आया, उसे सतो सामान्य युग अर्थात जिसे हम त्रेतायुग कहते हैं। इन दोनों कालखण्डों में मनुष्य जीवन में प्रेम, सुख, शांति, समृद्धि थी। सारे तत्व भी प्रचुर मात्रा में सात्विक और सुखदायी थे।

उसके बाद कालांतर में मध्य के बाद जिसे दोपहर या आफ्टरनून कहते हैं, उसमें मानव को सुख, शांति की कमी का एहसास होने लगा। इस समय से हमने सृष्टि में भक्तिमार्ग की छवि देखी। इस काल में मानव परमात्मा का आह्वान करने लगा, उनसे मांगने लगा, याचनाएं करने लगा। उस समय काल को हम ताम्बे का युग या द्वापरयुग कहते हैं।

फिर संध्या का समय आया जहाँ सूर्यास्त हुआ। तब रोशनी के अभाव में हम अंधकार महसूस करने लगे। इस ज्ञान अंधकार के कारण हर घर में कलह-क्लेष की प्रधानता हो गई, मनुष्य असंयमित जीवन व्यतीत करने लगा। इस काल में हमारी घड़ी की सूई चक्र लगाकर बारह तक पहुँचने लगी। काल चक्र के इसी समय पर सृष्टि को अज्ञान रूपी अंधकार से निकालने हेतु एक सुंदर घटना घटित होती है, जिसे आज भी हम शिवरात्रि या शिवजयन्ति के रूप में मनाते हैं। मनुष्य आत्मा के मन में ज्ञान की रोशनी भरने के लिए पुन: इस धरा पर परमात्मा का दिव्य अवतरण होता है। जैसे कि कई शास्त्रों में वर्णित है, और गीता में ये उल्लेख आता है कि 'यदा यदा हि धर्मस्य, ग्लानिर्भवति भारत... अर्थात् परमात्मा कहते हैं कि जब जब इस सृष्टि पर धर्म की अति ग्लानि होती है, तब पुन: मैं इस धरा पर देवत्व स्थापित करने के लिए, मनुष्य मन को ज्ञान की रोशनी प्रदान कर उसे रूपांतरित कर देवतुल्य बनाने आता हूँ।

आज का परिदृश्य

यदि हम आज के परिदृश्य को देखें तो लगता है कि यही समय परमात्मा के इस धरा पर अवतरित होने का उचित समय है, जहाँ चारो ओर मनुष्य अज्ञान अंधकार के भंवर में गोता खाते दिखाई देता है, उसे कुछ नहीं सूंझता कि क्या करें और क्या ना करें! क्या सही है और क्या गलत! तभी तो हम परमात्मा को याद करते हैं, उसे ढूंढ़ते हैं और उसे पुकारते भी हैं। लेकिन हमें ना तो उनकी सही पहचान है और ना ही हम उनको समझ सकते हैं, **क्योंकि वे तो निराकार हैं ना! वह कैसे आएगा, कब आएगा और किस तरह से हमें दु:ख दर्द से मुक्ति दिलायेगा! इस बारे में हमें मालूम ही नहीं। हमने सुना है, शास्त्रों में पढ़ा है, धर्मात्माओं एवं पैगम्बरों ने हमें उसके बारे में संकेत दिया, फिर भी परमात्मा से हमारा सम्बन्ध तो जुड़ नहीं पाया और ना ही हम उसे पहचान पाये और न ही मिल पाये।**

क्योंकि पहचानें भी कैसे, क्योंकि जैसे कोई छोटा बच्चा जन्मते ही अपने माता-पिता से बिछुड़ जाए, तो बड़े होने के बाद वो कैसे जान या पहचान पायेगा कि मेरा पिता कौन है। जब स्वयं पिता ही उसको बताये कि तुम मेरे बच्चे हो, तभी तो वो उन्हें पहचानेगा भी और उनसे सम्बन्ध भी जुटेगा और उनके वर्से का अधिकारी भी बनेगा। ठीक वैसे ही हम आत्माएँ भी जन्म-जन्मांतर से अपने पिता परमात्मा शिव से बिछुड़ गये और उन्हें भूल गये। हम जाने-अनजाने उसको याद भी करते रहे, फिर भी हम उसे पहचान न सके। वे स्वयं अवतरित होकर अब जब हमारा और अपना परिचय तथा अपने सम्बन्ध का ज्ञान दे, तभी तो हम उसे पहचान सकेंगे।

हमें आपको ये बताते हुए अति हर्ष हो रहा है कि वो महान समय अभी इस काल चक्र के अंदर पहुँच चुका है, जहाँ परमात्मा शिव का दिव्य अवतरण इस धरा पर होता है, और वे हम सबको इन कठिनाइयों एवं मुश्किलातों भरे जीवन से मुक्ति दिलाते हैं एवं कैसे अपने जीवन में सुख शांति एवं खुशहाली हो, उसकी सहज राह भी बताते हैं।

इस महान पर्व शिवरात्रि के अवसर पर हम आपको भी कहते हैं कि आइए, और परमात्मा से अपना सुख, शांति, प्रेम, समृद्धि का जन्मसिद्ध अधिकार प्राप्त कीजिए। यहीं परमात्मा के साथ मिलन करें और अपने भाग्य की तकदीर को जगाएं।

शुभकामना संदेश

सर्व के अति प्यारे पिता परमात्मा जो सर्व के कल्याणकारी हैं, उनका सभी आत्माओं के प्रति शुभ चिंतन और संदेश है, कि हे बच्चों! आप सभी को अब समय को नज़दीक से पहचानने की ज़रूरत है, जहाँ आये दिन रोज़ नयी चुनौतियाँ हमारे सामने होती हैं। आज समाज की दशा और दिशा दोनों दयनीय है। ऐसे में वे कहते हैं कि आपकी स्थिति जब श्रेष्ठ होगी, तो समाज तो अच्छा होगा ही होगा। इसी पुण्य कर्म को वो शिव कल्याणकारी पिता परमात्मा इस धरा पर अवतरित हो कर रहे हैं। इन पलों को अनुभव करने और कराने, सबको अपने पिता के शुभ आगमन का संदेश पहुँचाने का यह उचित समय है। ताकि हर आत्मा अपने पिता से सुख शांति का वर्सा प्राप्त करे और खुश होकर जीवन जिये और दूसरों के भी सुखी जीवन की कामना करे। इन्हीं शुभ आशाओं के साथ शिवरात्रि की आप सभी को कोटि-कोटि बधाई।- **ब्रह्माकुमारीज़ की मुख्य प्रशासिका दादी जानकी।**

परम शक्ति से जुड़ने से होगा बदलाव

परम शक्ति से योग हमें सब कुछ देगा, हमें स्वयं को बदलने की ताकत भी प्रदान करेगा। हर असंभव कार्य संभव भी हो जायेगा। बस ज्ञान और अनुभव को बढ़ाने के लिए अपनी सत्य पहचान और परमात्मा की सत्य पहचान कर उससे सम्बन्ध जोड़ हमें आगे बढ़ना है। इसके लिए अपनी इंद्रियों पर संयम की भी आवश्यकता है, जिससे हम सम्पूर्ण प्रकृति पर नियंत्रण कर सकें। बस स्वयं को हर पल, हर क्षण जागृत रखने की आवश्यकता है। इस शरीर रूपी साधन को मज़बूत बनाना है, जो नियम और संयम से ही संभव है। राजयोग एक ऐसा माध्यम है जिससे हमारे तन, मन दोनों निरोगी रह सकते हैं, और हम नर से नारायण भी बन सकते हैं। - **भारत के प्रधानमंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी।**